

**प्रनिदेशक** पुं. (तत्.) आयु. वह भाग या अंग जो किसी दूसरे अंग की गति, दिशा या पथ का निर्धारण करे।

**प्रपंच** पुं. (तत्.) 1. विकास, विस्तार, सुविस्तारता, प्रसार, बाहुल्य, फैलाव, विस्तारण 2. बखेड़ा, झमेला, झगड़ा, जंजाल, झंझट, आडंबर, ढोंग 3. छल-कपट 4. स्पष्टीकरण, विवरण 5. बहुविधता, विविध, ढेर, प्राचुर्य, मात्रा 6. दर्शन, दृश्यवस्तु, माया, जालसाजी, दृश्यमान।

**प्रपंचक** वि. (तत्.) प्रपंच करने वाला दे. प्रपंच।

**प्रपंचन** पुं. (तत्.) प्रपंच करना दे. प्रपंच।

**प्रपंच बुद्धि** वि. (तत्.) छली, कपटी, धोखेबाज, जिसके स्वभाव में ही प्रपंच करना शामिल हो।

**प्रपंची** पुं. (तत्.) प्रपंच करने वाला दे. प्रपंच।

**प्रपट्ट** पुं. (तत्.) 1. छिपटी, फलक, पट्ट, पट्टी 2. छिल्ला, दिलहा 3. खंड, भाग 4. खुरा 5. किसी बड़ी सतह से निकाला गया चपटा टुकड़ा, खपची।

**प्रपत्ति** स्त्री. (तत्.) अनन्य भक्ति, शरणागति।

**प्रपद** पुं. (तत्.) पैर का अग्रभाग।

**प्रपदिक** वि. (तत्.) पैर के अग्रभाग से संबंधित।

**प्रपदिक अस्थि** स्त्री. (तत्.) एड़ी और पैर की उंगलियों तथा अँगूठे को जोड़ने वाली पाँच अस्थियाँ।

**प्रपन्न** वि. (तत्.) 1. शरण में आया हुआ, शरणागत, संरक्षण ढूँढ़ने वाला, प्रार्थी, बेचारा, कष्टग्रस्त, दीन, याचक, पधारने वाला, पहुँचने या जाने वाला, 2. अनुसरण करने वाला 3. सुसज्जित, हासिल, प्राप्त, युक्त, आधिपत्यप्राप्त 4. प्रतिज्ञात।

**प्रपत्र** पुं. (तत्.) वह मुद्रित या टंकित पत्र जिसमें अपेक्षित सूचना देने के लिए रिक्त स्थान हों, कोई औपचारिक या कानूनी कागज।

**प्रपर्ण** वि. (तत्.) 1. पत्तों से रहित (वृक्ष) 2. गिरा हुआ पत्ता।

**प्रपा** स्त्री. (तत्.) 1. प्याऊ 2. पशुओं को पानी पिलाने का स्थान, कुंड, कूँआ, पानी का भंडार।

**प्रपाक** पुं. (तत्.) घाव या फोड़े का पकना, घाव या फोड़े के कारण हुई सूजन।

**प्रपात** पुं. (तत्.) 1. झरना, निर्झर, जल की वह धारा जो बहुत ऊँचाई से नीचे गिरती हो 2. वारि प्रवाह तेजी से ऊपर से गिरना, पतन, अवपात, गिर जाना, झड़ जाना 3. पहाड़ का उतार या ढाल, खड़ी चट्टान, ढलवाँ चट्टान।

**प्रपाती** पुं. (तत्.) खड़े किनारे वाला पर्वत/चट्टान वि. प्रपात संबंधी, प्रपात का।

**प्रपानक** पुं. (तत्.) आम, इमली आदि को भूनकर उसके गूदे में मसाले डाल कर बनाया गया एक शरबत या पेय, पना, पन्ना, पानक।

**प्रपितामह** पुं. (तत्.) 1. दादा का पिता, परदादा, पड़बाबा, पड़दादा 2. कृष्ण का एक विशेषण 3. ब्रह्मा की उपाधि।

**प्रपितामही** स्त्री. (तत्.) परदादी।

**प्रपीड़क** पुं. (तत्.) 1. दबाने वाला, अधिक कष्ट देने वाला, सताने वाला, प्रपीड़क 2. (गन्ना आदि) पेरने वाला, रस निचोड़ने वाला।

**प्रपीड़न** पुं. (तत्.) निचोड़ना, पेरना, अधिक कष्ट देना, भींचना, दूसरे से मिला कष्ट, बल प्रयोग, जोर-जबरदस्ती, दमन, दबाव, बाध्य करना, मजबूर करना, अवपीड़न, उत्पीड़न।

**प्रपीड़ित** वि. (तत्.) 1. जिसे बहुत कष्ट दिया गया हो, बहुत सताया हुआ 2. निचोड़ा हुआ, पेरा हुआ।

**प्रपुंज** पुं. (तत्.) थोक, बड़ा ढेर, अंबार, बड़ी राशि झुंड के झुंड, अनेक समूह, बड़ी मात्रा में, अधिक परिमाण वाला।

**प्रपुंज खरीद** स्त्री. (तत्.+फा.) अधिक संख्या, मात्रा या परिमाण में खरीद, थोक खरीद।

**प्रपुंजी बिक्री** स्त्री. (तत्.+तद्.) अधिक संख्या, मात्रा या परिमाण में, बिक्री, थोक बिक्री।

**प्रपुटी** स्त्री. (तत्.) श्लेष पुटी, स्नेह-पुटी, चिकनाहट भरी थैली या जगह जिससे दो पुर्जों या अंगों के बीच घर्षण से हानि न हो अथवा उसका दुष्प्रभाव पुर्जों या जोड़ों पर कम से कम हो।